

पद १००

(राग: जोगिया जिल्हा - ताल: दीपचंदी)

न साक्षी नापि देही नो वसिष्ठः। शिवोऽहं भोऽवधूतोऽहं
शिवोऽहं॥ध्रु.॥ गुरु जंगम लिंगैक्यादि बेको। अविद्या धूळि तीर्थ
माडबेको। प्रसाद बोध कोंडु नीड बेको। ता इहु इल्लदागे आग
बेको। महामंत्रार्थजपउ सोऽहं सोऽहं शिवोऽहं भो॥१॥ न सालिक

न आशिक सालिकु सुन्नी कुफर है, खुदा है खुदा है तू। मुकामे
लाहूत जबरूत मलकूत। फना है सब न महजीद काबा और
बुतखाना है तूं। चिराग है तू॥२॥